

Ziel gelangt BṛĀg. P. 3,6,22. न प्रपेड्य ते क्रतुम् MBh. 1,8102. रणाम-  
ध्यं प्रपेदिरे 5,7317. यद्येव देवो पृथिवीं प्रविष्टा दिवं प्रपन्नाप्यथ वा समु-  
द्रम् DBaup. 6,13. HARIV. 5287. 6408. R. 1,61,2 (act.). KATHĀS. 35,98. प्र-  
पेड्करयो गुहाः R. 2,97,5. पदं हरेः BṛĀg. P. 1,12,27. राजधाम प्रपेद्  
RĀĠA-TAR. 5,482. तपोवनम् BHATṬ. 4,1. धमनीर्यदा मातरिश्वा प्रपद्यते  
SUGR. 1,251,20. यत्कृते ऽहं दुर्गे प्रपन्ना भृशदारुणाम् । वनम् N. 12,63. पु-  
नर्यौ प्रपेदिरे MBh. 1,8217. का च काष्ठा समासाद्य प्रपत्स्यते कृतं युगम्  
antreten HARIV. 11172. तं प्रपेदे विभीषणः zu ihm kam RAGH. 12,68.  
सातःपुत्रज्ञानश्चैने (ऋषिपुत्रे) प्रपेद् begab sich hin zu R. 1,9,68. RAGH. 3,1.  
तां जन्मने शैलवधूं प्रपेद् KUMĀRAS. 1,21. — 2) Hülfe oder Schutz su-  
chend sich einstellen bei (acc.), sich flüchten zu: ब्रह्म प्रपद्ये ब्रह्म मा  
नत्रोद्गापायतु AIT. Br. 7,22. 8,11. TS. 6,3,6,3. 8,5. ÇĀÑKH. ÇR. 1,4,5. इ-  
न्द्रं शरणं प्रपन्नो ऽभूवम् KHĀND. Up. 2,22,3. ÇVETĀÇV. Up. 6,18. N. 8,18.  
20,14,29. MBh. 4,202. 5,7007. 7009. 7038. R. 1,57,16. 2,31,8. RAGH. 14,64.  
शिष्यस्ते ऽहं शाधिं मां तौ प्रपन्नम् BHAG. 2,7. 4,11. 7,14. 15. 19. MBh. 5,  
7331. 7,2867 (act.). 13,1016. 1362 (act.). प्रपन्नानामरत्नो R. 5,91,12.  
BṛĀg. P. 3,21,7. भगवत्प्रपन्नाः 1,16,33. 8,3,3. त्रिनशासनम् so v. a. die  
Lehre Ġina's annehmen RĀĠA-TAR. 1,102. — 3) sich (zu Jmds Füßen)  
werfen: तव शक्रान्घनज्ञातः पादावद्य प्रपद्यताम् MBh. 3,1813. मूर्ध्ना प्रप-  
न्नो ऽस्मि पदिता ते 1863. R. GORR. 2,74,35 (act.). BṛĀg. P. 8,22,10. her-  
unterstürzen: अथाम्बराद्घनजनाः प्रपेदिरे सपादपाः — मूढाद्घनः MBh.  
1,1183. — 4) anfallen: गच्छामित्रान्प्र पद्यस्व RV. 6,73,16. AV. 14,10,  
18. — 5) sich in ein Verhältniss begeben, in eine Lage —, einen Zu-  
stand gerathen: न संशयं प्रपद्येत er begeben sich nicht in Gefahr JĀĠĀ. 1,  
132. योगं प्र पद्ये तैर्मै च AV. 19,8,2. इन्द्रोमवस्थां प्रपन्नो ऽस्मि ÇĀK. 60,  
12. तत्र यदि तथाभूतं प्रेम प्रपन्नमिमं दशाम् AMAR. 27. चित्तम् MBh. 3,  
7412. R. 1,8,17. VET. in LA. 16,9. श्रुतेदानो प्रपद्येयाः स्वां मातम् so v.  
a. sich sein Urtheil bilden MBh. 5,7415. रतिम् R. 2,94,26. यमुनालिङ्ग-  
नप्रीतिं प्रपेद् दक्षिणार्णवः RĀĠA-TAR. 1,296. 3,525. शान्तिम् PRAB. 3,5.  
प्रशमम् 98,14. समदुःखभावम् RAGH. 14,69. दैवज्ञत्वम् VARĀH. BRH. S. 2,17.  
वाहनत्वम् KATHĀS. 36,15. लोकौपहासस्तत्तताम् DAÇAK. in BENF. Chr. 184,  
24. — 6) gelangen zu, erlangen, theilhaftig werden: सद्यो यथा प्रपद्येत  
देवी गर्भं तथा कुरु MBh. 1,4262. आत्यक्तिकेन सन्नेन दिवं देवाः प्रपेदिरे  
BṛĀg. P. 3,6,28. यया वृत्तिं प्रपद्यते 21. कात्तं वपुर्व्योमचरम् RAGH. 3,31.  
वाल्यात्परं साधु वयः प्रपेद् SĀH. D. 52,5. दिव्यो गतिं वररुचिः स नित्रो  
प्रपेद् KATHĀS. 5,141. शब्दस्य सिद्धिं येन प्रपद्यते so v. a. des Lautes  
inne werden, den Laut vernehmen BṛĀg. P. 3,6,17. अरिसुन्दरीणां शो-  
कार्णाचोदयनिदानपदं प्रपेद् so v. a. wurde die Ursache, dass Inschr. in  
Journ. of the Am. Or. S. 6,303, Çl. 15. — 7) gehen an, sich an Et-  
was machen: अग्रप्रपद्यं कर्माणि नित्यदेयानि MBh. 12,1219. हर्षणाय  
sich dem Raube hingeben HARIV. 11149. पश्यामो मयि किं प्रपद्यते was  
sie in Bezug auf mich thun wird, wie sie sich gegen mich verhalten  
wird AMAR. 20. — 8) anbrechen, eintreten (von einem Zeitpunkt, einem  
Zeitraum): प्रगृहीते ततो धर्मे प्रपत्स्यति कृतं युगम् HARIV. 11217. रा-  
ज्यं प्रपन्नायाम् R. 2,42,32. 54,33. ज्येष्ठमासि Inschr. in Journ. of the  
Am. Or. S. 6,330. erscheinen überh.: यत्र प्रापदि शशा उल्कूपीमान् AV.  
5,17,4. — 9) von Statten gehen: स (क्रतुः) मत्प्रसूतः प्रपत्स्यते वेद्वि-  
धिप्रवृत्तः MBh. 13,3527. अग्रवृत्ताः प्रपत्स्यते समयाः शपयास्तथा so v. a.

werden keine Geltung, keine Bedeutung haben HARIV. 11157. — 10)  
mit einem adv. auf सात् werden zu: ते (शराः) ऽस्य सर्पसात् प्रपेदिरे  
BHATṬ. 14,45. — 11) einwilligen, zugeben (vgl. u. प्रति): प्रसाद्यमानः  
शिरसा मया स्वयं बद्धप्रकारं यदि न प्रपत्स्यते R. 2,88,25. प्रपन्ना ऽर्थः  
eine anerkannte Geldforderung JĀĠĀ. 2,40. — 12) प्रपन्न versehen mit  
(instr.) ÇĀK. 1 (nach der am meisten beglaubigten Lesart). — प्र पदात्  
AV. 6,28,1 fehlerhaft für प्र पतात् des RV. — Vgl. अग्रपदन. — caus.  
eintreten lassen, einführen in: शालाम् ÇAT. Br. 3,1,2,21. AIT. Br. 1,3.  
med.: घातमन् ÇAT. Br. 7,5,1,20. 8,1,1,6. इन्द्रं मध्यं प्रापादयत् AIT. Br.  
3,16. प्रपाद्यमान pass. 1,30. — desid. eintreten wollen: द्वारा पुरं प्र-  
पित्सेत् ÇAT. Br. 11,1,1,3. an Etwas zu gehen im Begriff stehen: कि-  
मपि कृच्छ्रं प्रियजनव्यसनमूलं प्रपित्सेते (P. 7,4,54, Sch.) DAÇAK. 114,10.  
— अतिप्र caus. in der uns unverständlichen Stelle MBh. 4,1717.  
— अनुप्र 1) nach Jmd (acc.) eintreten, — betreten AIT. Br. 2,20. ÇAT.  
Br. 7,5,1,20. KĀTH. 29,2. ÇĀÑKH. ÇR. 5,6,6. एकस्य धर्मेण सतां मतेन  
सर्वे स्म तं मार्गमनुप्रपन्नाः MBh. 3,16772. nach Jmd kommen, — erschei-  
nen, hinzukommen, hinzutreten: कृते युगे धर्मं आसीत्समप्रस्रिताकाले  
ज्ञानमनुप्रपन्नः (doch wohl ऽपन्नम्) । बलं चासीद्दुपरे 13,7363. — 2) der  
Reihe nach eintreten: गेहानुप्रपादम्, गेहं गेहमनुप्रपादम्, गेहमनुप्रपाद-  
मनुप्रपादम् (आस्ते) von Haus zu Haus gehend P. 3,4,56, Sch. Man strei-  
che hiernach oben den Artikel अनुप्रपाद. — 3) hineingelangen in: दो-  
षा धमनीरनुप्रपद्य सुGR. 1,258,7. — 4) folgen, willfahren: त्रयोधर्ममनु-  
प्रपन्नाः BHAG. 9,21. भावं न तस्याहमनुप्रपद्याम् R. 5,28,5.  
— अतिप्र 1) hinzutreten, betreten; gelangen zu, in TBr. 1,6,9,9. त-  
न्न सर्वं इवाभिप्रपद्येत ÇAT. Br. 3,1,4,9. 11,4,1,3. 2,6,1,40. शुक्रं योनि-  
मभिप्रपद्येत सुGR. 1,320,14. KĀTH. 28,2. पन्नम् 29,2. 30,1. आद्यं धनिष्ठा-  
शमभिप्रपन्नः (Jupiter) VARĀH. BRH. S. 8,27. sich begeben zu, hineilen zu:  
(असुराः) गगनमभिप्रपद्य MBh. 1,1182. — 2) Schutz oder Hülfe suchen  
bei Jmd (acc.): उभावेतौ (die Brahmanen und Kshatrija) नित्यमभिप्र-  
पन्ना संप्रापतुर्महतीं प्रतिष्ठाम् MBh. 12,2786. संग्रामे ऽभिप्रपन्नानां तवा-  
स्मीति च वादिनाम् R. 5,91,14. भगवत्पादयोर्मूलं शरणमभिप्रपन्नः DAÇAK.  
in BENF. Chr. 179,20. — 3) gehen an, sich machen an: तदेवाभिप्रपद्येत  
MBh. 3,1209.  
— संप्र 1) zusammen betreten, — eintreten in: आग्रोधम् AIT. Br. 2,  
36. पत्नीशालम् 5,22. दक्षिणापयगौ — अग्रानं संप्रपेदतुः machten sich auf  
den Weg HARIV. 5289. sich hineinbegeben in: भगवांस्ते ऽन्तरो गर्भमद्वृ-  
त्संप्रपत्स्यते BṛĀg. P. 3,24,2. gerathen in: महागाधे नैरिव संप्रपन्ना  
MBh. 12,2787. sich begeben zu, kommen zu (insbes. um Hülfe zu su-  
chen): संप्रपद्येत मनसा वैज्ञवं पदमुत्तमम् HARIV. 11683. त्वमिमं संप्रपन्नाय  
संशयं ब्रूहि पृच्छते MBh. 13,4837. ततः समाधियुक्तेन क्रियायोगेन कर्दमः ।  
संप्रपेदे हारिं भक्त्या BṛĀg. P. 3,21,7. — 2) zu Stande kommen: यद्येकेन  
न हस्तेन तालिकः संप्रपद्यते PĀÑKĀT. II,137. — 3) mit einem adv. auf  
सात् werden zu: ते (शराः) ऽस्य सर्पसात्संप्रपेदिरे BHATṬ. 14,45, v. l. — 4)  
संप्रपन्न erfüllt von: अन्योऽन्यपीवरगुणाधिकं ऽ KAUPĀP. 43.  
— अतिसंप्र gelangen zu, theilhaftig werden: देही स्थनिषु त्रयाण्यभिसं-  
प्रपद्यते ÇVETĀÇV. Up. 3,11.  
— प्रति 1) betreten, hinzutreten, eintreten, gelangen nach, sich bege-  
ben nach, zu: प्रति पन्ध्यामपद्मच्छि VS. 4,29. इतः पन्ध्यां प्रतिपद्यस्व